चित्शक्ति विलास

स्वामी मुक्तानन्द

चित्त, जैसा चिन्तन हो, वैसा फल देने वाला है। मानव चित्त से ही शान्त, चित्त से भ्रान्त, चित्त से मेधावी, चित्तप्रसाद से कवि, चित्त से बुद्धिमान, चित्त से उच्च कलाकार, चित्त से महान संगीतकार, चित्त से योगी होता है। चित्त से शास्त्रों में उपाधि और चित्त से ही समाधि प्राप्त है। चित्त ही गुरु, चित्त शक्ति-संचालक और चित्त ही निर्विकल्प पद है। चित्तभ्रष्ट सदा कष्टी, कर्माचार-भ्रष्टी, मोक्षमार्ग-नष्टी होता है। मलिन चित्त ही घोर नरक है।

चित्त को सँभालो। चित्त तुम्हारा सुखद मित्र है। गुरुजनों के परम प्यार का अधिकारी शुद्ध चित्त है। इसलिए तुम शान्त चित्त से ध्यान करो। चित्त में रहने वाला परमेश्वर तुरन्त प्रसन्न होकर तुमको अपना पूरा विश्वरूप ध्यान में दिखलाएगा। इस चित्तप्रसाद से तुम आत्म-विमर्श सहज में पाओगे।

तुम्हारे पास चित्तरूप कितनी बड़ी सम्पत्ति है! इतनी महान आश्चर्यमय चितिशक्ति तुम्हारे पास होते हुए भी तुम क्यों चिल्लाते हो? क्यों दुःखी हो? क्यों हीन हो? क्यों दीन हो? चित्त में सतत रहने वाली चितिशक्ति की पूजा करो। चित्त में अन्तर-स्फुरणरूप में स्फुरने वाले आत्मतत्त्व को सदा याद रखते हुए व्यवहार करो।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१७] पृष्ठ ४९।